राव, घोष, डांगे और पुन्नैया के बारे में जानकारी के साथ मास्को पहुंचे के.स. भाकपा के प्रतिनिधियों के साथ विचार विमर्श के संबंध में सुस्लोव, मलेंकोव, ग्रिगोरियन और पी युदीन का स्तालिन को नोट और जे.वी. स्तालिन की हस्तलिखित टिप्पणी.

(८ फेब्रुअरी, १९५१)

परिचय

यह दस्तावेज़ फरवरी और मार्च 1951 में सोवियत राजधानी में आयोजित सी.पी.एस.यु.(बी) और भाकपा के बीच हुई बहसों की श्रृंखला से संबंधित सामग्री का हिस्सा है, जो अब मास्को में पूर्व पार्टी के केंद्रीय अभिलेखागार के स्टालिन प्रभाग के पास है. पी सी जोशी, बी टी रणदिवे और राजेश्वर राव के लगातार तीन कार्यदिशा के परिणामस्वरुप भाकपा में हुई वास्तविक टूट और गतिहीनता से ये बहसें उत्पन्न हुई थी जिसने सोवियत पार्टी की सलाह लेने के लिए पार्टी को मजबूर किया. भाकपा प्रतिनिधिमंडल ने डायमंड हार्बर से काला सागर के लिए और इसतरह सोवियत भूमि के लिए समुद्र द्वारा यात्रा की थी. सी.पी.एस.यु. (बी) की केंद्रीय समिति से सुस्लोव, मलेंकोव, ग्रिगोरियन एवं पी युदीन और, राजेश्वरा राव, एम. बसवापुन्नैया, अजय घोष, और भाकपा की केंद्रीय समिति के एस ए डांगे के बीच दो प्रारंभिक विचार-विमर्श ४ और ६ फरवरी को हुआ था. भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने बी टी रणदिवे और जी अधिकारी के बदनाम गुट को बहार रखा था. इस दस्तावेज़ के मुख्य भागों में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों की राजनीतिक-जीवन का विवरण, 4 और 6 फरवरी के विचार विमर्श का एक सारांश (पहले से ही सितंबर 2006 में इस पत्रिका में पूर्ण प्रकाशित) और, सबसे महत्वपूर्ण, भाकपा की अवस्थिति पर चिन्हों और रेखांकन के द्वारा अपनी राजनीतिक प्रतिक्रियाओं का खुलासा करते हुए स्तालिन की टिप्पणी (जो पत्रिका के इसी अंक में प्रकाशित हुआ था) शामिल है. स्टालिन और भाकपा प्रतिनिधिमंडल के बीच हुए दूसरी बहस का दस्तावेज़ अभी भी अभिलेखागार में बंद है।

टिटो और कर्देल्ज की समझ से निकली रणदिवे की क्रांति की लोकतांत्रिक और समाजवादी चरणों के गुंथन की आवश्यकता की समझ को स्टॅलिन, जो बाद में 'खतरनाक' होने के रूप में इस सोच को पेश करने वाले थे, ‘मूर्खतापूर्ण’ करार करते हुए यहाँ टिपण्णी करते है; इस मार्क्सवादी समझ के तार्किक परिणामस्वरुप ये विचार आये थे कि भारत

1951 में अभी भी एक औपनिवेशिक देश था जहां क्रांति के लोकतांत्रिक कार्य अभी भी सबसे अहम् था. इसके अलावा, युद्ध के बाद की अवधि में लोक जनवादी क्रांति को दोनो, साम्राज्यवादी देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में और साथ ही साथ भारत जैसे उपनिवेशों और अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों में एक सार्वभौमिक प्रारंभिक चरण के रूप में देखा गया था. समाजवाद का चरण लोक जनतांत्रिक राज्यों के क्रांतिकारी विकास के दूसरे प्रमुख चरण के रूप में माना गया था।
स्टालिन की मुख्य आलोचना भाकपा के आंध्र समिति के विचारों को प्रतिनिधित्व करने वाले राजेश्वरा राव, और एम बसवापुन्नैया के विचारों को निर्देशित किया गया है जो भारतीय परिस्थितियों के लिए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की क्रांति के सफल पथ का अनुसरण करने की वकालत करता है. उन्होंने लंबी लड़ाई के दौरान मुक्त क्षेत्रों की स्थापना करने का और तेलंगाना और आंध्र में चल रहे संघर्ष की तर्ज पर पूरे देश की मुक्ति के लिए मुक्त क्षेत्रों की स्थापना करने का तर्क दिया था. अपनी टिप्पणी में स्टालिन ने स्पष्ट रूप से इस विचार को ख़ारिज कर दिया कि नेहरू सरकार अंग्रेजी साम्राज्यवाद की एक कठपुतली थी और यह कि उस मोड़ पर सशस्त्र संघर्ष भारत में वर्ग संघर्ष का मुख्य रूप था। ९ फ़रवरी १९५१ को स्तालिन का भाकपा नेताओं के साथ हुई चर्चा में यह उल्लेख किया गया था कि सीपीसी की कार्यनीतिक दिशा एक गंभीर आवश्यकतावस् लिया गया था. एक बार चीनी कम्युनिस्ट सेनानियों के मंचूरिया पहुंच जाने के बाद उनके साथ लगे विश्वसनीय सोवियत सेनाओं की कतार के अस्तित्व के परिणाम स्वरूप, जिसने बाद में कुओमिन्ग्तन्ग की ताकतों के खिलाफ आक्रामक होने के लिए जन मुक्ति सेना को अवसर दिया था, लंबी लड़ाई की कार्यदिशा चीन में सफल होने के योग्य हो पायी थी. (मंचूरिया में जापानी चौथी सेना को हराने में लाल सेना की भूमिका को सोवियत नेता ने कभी नजरंदाज नहीं किया था). उसकी तुलना में जिससे चीन लाभान्वित हुआ था, भारत से लगा कोई दोस्ताना समाजवादी देश नहीं था. इस कारण से भारत में क्रांतिकारी ताकतों के लिए सशस्त्र संघर्ष करना जरुरी था जिसे शहरी क्षेत्रों में सशस्त्र मजदूरों के 'टुकड़ियों" की ताकत के संयोजन के रूप में परिभाषित किया गया था जिसने किसानों के गुरिल्ला युद्ध के साथ रूस में क्रांतिकारी प्रक्रिया में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी, जिसका तेलंगाना में प्रदर्शन किया गया था. स्टालिन द्वारा दिए गए तर्क ने भारतीय राज्य और क्रांति के कार्यनीतिक दिशा के उनकी पहले की समझ वापस लेने के लिए आंध्र समिति के नेताओं को राजी किया और १९५१ में तैयार की गई कार्यक्रम और कार्यनीतिक दिशा को भाकपा के अन्य नेताओं के साथ उन्होंने स्वीकार किया.

इस कारण से, और इसलिए भी क्योकि १९६० के दशक में अधिकांश कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के बीच आन्ध्र के कार्यदिशा को पुनर्जीवित किया गया था, इस दस्तावेज़ का न सिर्फ ऐतिहासिक, बल्कि एक समकालीन महत्व भी है. पीछे मुड़कर देखें तो यह देखा जा सकता है कि स्टालिन की सलाह से तैयार किया गया १९५१ का कार्यक्रम, कार्यदिशा और चुनाव पर बयान केवल उनके उत्तराधिकारी के उदय होने तक ही प्रभावी रहे. ख्रुश्चेव ने कम्युनिस्ट आंदोलन का औपनिवेशिक देशों के राष्ट्रीय बुर्जुआ के साथ अधीनस्थ सहयोग शामिल करते हुए राष्ट्रीय लोकतंत्र के विचार को स्थापित किया और और सुधारवादी नेताओं को प्रोत्साहित किया जो मौलिक रूप से पी सी जोशी से भिन्न नहीं थे. जबकि सीपीआई एम लगभग एक दशक तक १९५१ की अवस्थिति पर टिका रहा, इसने तेजी से सुधारवादी अवस्थिति के आगे घुटने टेक दिए. १९७५ में पार्टी के महासचिव पद से इस्तीफे के अपने पत्र में पी सुन्दरैया ने १९५१ के कार्यक्रम और कार्यदिशा के परित्याग के बारे में विस्तार से उल्लेख किया था. अपनी पार्टी में अपने विचारों को लेकर सुन्दरैया को अलग-थलग कर दिया गया था और इसके अलावा इस अवधि के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के अधिकांश, अपने व्यवहार में व्यक्तिगत आतंकवाद की ओर झुकाव के चाहे साथ हो या उसके बिना, आंध्र समिति की अवस्थिति की तरफ लौट गए थे. उनके इस शताब्दी वर्ष में यह याद करना उपयुक्त है कि कार्यक्रम और भारतीय क्रांति की कार्यदिशा के बारे में 1951 में दिए गए स्टालिन की सिफारिशों के साथ सुन्दरैया लगभग अकेले खड़े रहे.

विजय सिंह

अनुवाद – प्रोलेतारियन क्रिटिक
www.proletariancritique.blogspot.in

फोंड संख्या 46 558

गोपनीय

सेशन संख्या 11

आंतरिक रजिस्ट्री

प्रकरण - भारत - सामग्री सन्दर्भ- भारत की कम्युनिस्ट पार्टी

8 – 28 II 1951

क्रमांक	दस्तावेज की तिथि और संख्या	किससे और दस्तावेज़ की सामग्री	पन्ने की संख्या	टिप्पणियां
१.	8.II.51 वर्ष	राव, घोष, डांगे और पुन्नैया के बारे में जानकारी के साथ मास्को पहुंचे के. स. भाकपा के प्रतिनिधियों के साथ विचार विमर्श के संबंध में सुस्लोव, मलेंकोव, ग्रिगोरियन और पी युदीन का स्तालिन के लिए टिप्पणी और जे.वी. स्तालिन की हस्तलिखित टिप्पणी.	१ – ७०	
२.	9.II.51 वर्ष	स्टालिन और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों राव, घोष, डांगे और पुन्नैया के बीच बातचीत की प्रतिलिपि	७१ –८६	
३.	16.II.51 वर्ष	कुछ सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर के लिए एक अनुरोध के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक आयोग सीसी ए यु सी पी (बी) के अध्यक्ष की टिप्पणी.	८७ -११३	
४.	21.II.51 वर्ष	मलेंकोव और सुस्लोव का भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों राव, घोष, डांगे और पुन्नैया के साथ चर्चा की प्रतिलिपि.	११४ – ११८	
५.	28.II.51 वर्ष	ग्रिगोरियन द्वारा स्टॅलिन को नोट -सन्दर्भ- संपादकों की टिप्पणी के साथ भाकपा के कार्यक्रम मसौदे का सौपा जाना.		

कॉमरेड स्टालिन के लिए [i]

४ और ६ फेब्रुअरी को के.स. भाकपा के प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श हुआ था जो अपने अनुरोध के बाद भाकपा में घटित घटनाक्रम के सम्बन्ध में के.स. ऐयुसीपी(बी) से विचार विमर्श करने के लिए मास्को आये है.

कॉमरेड राव, के.स. भाकपा के महासचिव, पोलित ब्यूरो के सदर्स्य कामरेड घोष और डांगे और केंद्रीय समिति के सदस्य कामरेड पुन्नैया मास्को आये हैं।

इन साथियों की पृष्ठभूमिक जानकारी इस प्रकार है.

कामरेड राजेश्वर राव का जन्म १९१५ में हुआ था, १९३४ से भाकपा के सदर्स्य रहे है; १९४८ के पहले आंध्र प्रान्त में भाकपा के सचिवालय में काम किया. वे द्वितीय कांग्रेस (१९४८) के पार्टी के के.स. की नीति के आलोचक रहे है जो के.स. के महासचिव जोशी द्वारा चलाई गयी थी. दूसरे कांग्रेस के बाद पूर्व के महासचिव रहे कामरेड रणदिवे के नेतृत्व में भाकपा के.स. द्वारा चलाई गई नीतियों का भी उन्होंने विरोध किया था. भाकपा के दूसरे कांग्रेस में कामरेड राजेश्वर राव केन्द्रीय समिति और पोलितब्यूरो के सदर्स्य चुने गए थे और मई १९५० में भाकपा के महासचिव चुने गए थे.

कामरेड घोष का जन्म १९०८ में हुआ था और १९३१ में वे पार्टी में आये; पार्टी में आने के पहले आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त थे. १९३४ में के.स. और १९३६ में भाकपा के के.स. के पोलितब्यूरो के सदर्स्य चुने गए, 'राष्टीय मोर्चा' नामक अखबार का संपादन किया और १९४३ में क्षय रोग होने के चलते पोलितब्यूरो में अपने कर्तव्यों से निर्मुक्त किये गए. १९४८ में पार्टी के दूसरे कांग्रेस में केन्द्रीय समिति और के.स. के पोलितब्यूरो में चुने गए पर तुरंत ही गिरफ्तार कर लिए गए. घोष ने रणदिवे के नीतियों का विरोध किया, और जब अभी जेल में थे, *'हमारी पार्टी में संकीर्णतावाद'* लेख लिखा. जून १९५० में वे जेल से मुक्त किये गए और डांगे और गते(?) के साथ मिल कर भाकपा के.स. को एक पत्र लिखा जिसमे उन्होंने पार्टी नीति के मूलभुत प्रश्नों से सम्बंधित निर्णयों पर अपना मतभेद जाहिर किया. दिसम्बर १९५० में घोष को पुनर्गठित के.स. और भाकपा के.स. के पोलितब्यूरो में शामिल किया गया.

कामरेड डांगे का जन्म १८९९ में हुआ था और १९२४ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदर्स्य रहे है. वह देश के मजदूर आन्दोलन और भाकपा के संस्थापक सदर्स्यो में से एक है. उन्होंने मजदूर आन्दोलन पर कई किताबे और लेख लिखा है, पार्टी के अखबार का संपादन किया है, और मजदूरों के हड़ताल को संगठित करने में और मजदूर संगठन बनाने में सक्रीय हिस्सेदारी की है. १९४३ में वे आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और उसी वर्ष भाकपा के प्रथम कांग्रेस आयोजित करने में हिस्सा लिया और भाकपा के. स. के सदर्स्य चुने गए. १९४६ में मास्को में ट्रेड यूनियन के वर्ल्ड फेडरेशन की कार्यकारी समिति की विस्तृत बैठक में भाग लिया. भाकपा के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने १९४४ में इंग्लैंड की कम्युनिस्ट पार्टी के कांग्रेस में भाग लिया. उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया है और उन्होंने कुल १५ वर्ष जेल में काटा है. घोष के साथ उन्होंने भाकपा

के.स. को एक पत्र लिखा था जिसमे राव के नेतृत्व वाले के.स. की नीति से अपनी असहमति व्यक्त की थी. दिसंबर १९५० में पुनर्गठित के.स. और भाकपा के.स. के पोलितब्यूरो में शामिल कर लिए गए.

कामरेड पुन्नैया का जन्म १९१५ में हुआ था. वह १९३५ से भाकपा के सदर्स्य है और आंध्र पार्टी समिति और मद्रास प्रांतीय समिति में एक लम्बे समय तक कामरेड राव के साथ काम किया है. दिसम्बर १९५० में वे पुनर्गठित भाकपा के के.स. में शामिल किये गए.

पार्टी में गंभीर मतभेद के चलते ये कामरेड् मास्को आये है. इन मतभेदों के इतिहास पर एक संक्षिप्त नोट नीचे दिया जा रहा है.

१६००० सदर्स्यो की पार्टी को प्रतिनिधित्व करते हुए मई १९४३ में प्रथम कांग्रेस होने के तुरंत बाद पार्टी में ये मतभेद उभर कर सामने आये थे. पार्टी के प्रथम कांग्रेस ने पार्टी के संविधान को स्वीकार किया और केन्द्रीय समिति का निर्वाचन किया. जोशी को पार्टी का महासचिव चुना गया.

९०००० सदर्स्यो को प्रतिनिधित्व करते हुए २८ फेब्रुअरी और ६ मार्च १९४८ के बीच भाकपा के दूसरे कांग्रेस में, संविधान में संसोधन किया गया और स्वीकृत किया गया और महासचिव रणदिवे के नेतृत्व में केन्द्रीय समिति का निर्वाचन हुआ.

भाकपा के द्वितीय कांग्रेस ने के.स. के कामकाज में हुई गलतियों की और महासचिव जोशी की आलोचना की. द्वितीय विश्व युद्ध में फासीवाद की हार के परिणामस्वरुप साम्राज्यवाद के स्वत: पतन के त्रुटीपूर्ण सिद्धांत का पालन करने का और ब्रिटिश साम्राज्यवाद और उसके समर्थको - रजवाडो, सामंतो और जमींदारों- के खिलाफ कोई संघर्ष नहीं चलने का आरोप जोशी पर लगाया गया था.

भाकपा के द्वितीय कांग्रेस ने जोशी के कार्यदिशा को सुधारवादी कहते हुए भर्त्सना की और उन्हें केन्द्रीय समिति में नहीं चुना. द्वितीय कांग्रेस के बाद जोशी को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था.

द्वितीय कांग्रेस में निर्वाचित नयी केन्द्रीय समिति की बैठक १९५० तक नहीं हो पाई और के.स. के पोलितब्यूरो के महासचिव रणदिवे की अध्यक्षता में पार्टी का नेतृत्व किया गया.

नवम्बर और दिसम्बर १९४८ में भाकपा के.स. के पोलितब्यूरो ने महासचिव रणदिवे का रिपोर्ट "*भारत में जनवादी क्रांति के लिए संघर्ष की रणनीति और कार्यनीति*" का अनुमोदन किया.

आंध्र पार्टी संगठन के कामरेड राव और पुन्नैया ने के.स. के खिलाफ रणदिवे के विचारों की आलोचना की। भारतीय पूंजीपति वर्ग के पूरे वर्ग को गद्दार के रूप में, ग्रामीण इलाकों में कुलको को मुख्य दुश्मन के रूप में गलत तरीके से चित्रण करने और ग्रामीण इलाको में सामंती संबंधो के

खिलाफ संघर्ष को पूरी तरह से एक अलग कार्य के रूप में न देखने का आरोप रणदिवे पर लगाया गया था.

मई १९५० में हुए भाकपा के.स. की सभा ने पूर्व महासचिव रणदिवे की नीति की बाम संकीर्णतावाद के रूप में भर्त्सना की और के. स. का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया. कामरेड राजेश्वर राव भाकपा के.स. के महासचिव चुने गए. राव के नेतृत्व में नै के. स. ने सभी पार्टी सदस्यों और इसके समर्थको के लिए एक पत्र जारी किया. इस पत्र में कहा गया था कि भारत में सच्ची राष्टीय मुक्ति के लिए हथियान्र्बंद सघर्ष अनिवार्य रूप से संघर्ष का मुख्य रूप होना चाहिए.

भारत में राष्टीय मुक्ति के लिए लड़ने की इच्छा रखने वाली आबादी के सभी वर्गों और तबको का एक संयुक्त मोर्चा गठित करने की आवश्यकता पर के.स. ने बल दिया और जनता को संयुक्त मोर्चा में एकताबद्ध करने की सफलता को इसने हथियारबंद संघर्ष के विकास के मातहत किया. पत्र ने ग्रामीण इलाकों में कोमुनिस्ट पार्टी के विस्तार करने के काम पर ज्यादा ध्यान देने की जरुरत पर बल दिया. के.स. ने रेखांकित किया की पूरे भारत में हथियारबंद संघर्ष आज की जरुरत है और कि स्थितियां अब हथियारबंद संघर्ष की उन्नति के लिए परिपक्व हैं.

कुछ प्रान्तीय इकाइयों ने पत्र पर विचार विमर्श करने के बाद केन्द्रीय समिति के दिशानिर्देश से अपना मतभेद जाहिर किया है. पार्टी संगठन के बॉम्बे प्रान्त के जाने-माने नेता कामरेड डांगे और घोष ने एक घोषणा की थी जिसमे उन्होंने उल्लेख किया था कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्य कार्य पार्टी को मजबूत करने, साम्राज्यवादियों और सामंती कुलीनों के खिलाफ भारतीय जनता का सबसे व्यापक आधार एकता स्थापित करने और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चे का गठन करने में है जो शांति के लिए युद्ध के खिलाफ अनिवार्य रूप से एक मोर्चे की तरह कार्य करे.

कामरेड डांगे और घोष ने घोषणा की कि, वर्तमान परिस्थिति में, इस तथ्य के आलोक में कि पार्टी के पास प्रयाप्त शक्ति की कमी है और कि हथियारबंद संघर्ष का विस्तार करने की स्थितियां अभी परिपक्व नहीं है, हथियारबंद संघर्ष को संघर्ष का मुख्य रूप नहीं माना जा सकता. साथ ही उन्होंने कहा कि कुछ क्षेत्रो में जहाँ हथियारबंद संघर्ष के लिए परिस्थितियां परिपक्व है, इसे चलाया जा सकता है लेकिन इसे एक रक्षात्मक संघर्ष के रूप में और जमीन के लिए किसानो के समग्र संघर्ष के एक हिस्सा के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए.

भारत में मजदूर वर्ग की भूमिका कम करने का आरोप कामरेड डांगे और घोष ने के.स. पर लगाया. देश की सामजिक-आर्थिक स्थितियों को नजरंदाज कर के चीनी क्रांति के अनुभवों को भारत में यांत्रिक ढंग से लागू करने का आरोप भी वे केंद्रीय समिति के नेतृत्व पर लगाते है.

भाकपा के.स. की १९५० में सभा हुई थी जिसने कामरेड घोष और डांगे को के.स. और पोलितब्यूरो में शामिल किया और बहुत सारे प्रश्नों पर(जनवादी ताकतों का संयुक्त मोर्चा इत्यादि) आम सहमती से निर्णय लिया. हालाकि मुख्य मतभेदे ख़त्म नहीं हो पाई थी. उस तरह की परिस्थिति में भाकपा के.स. सलाह लेने के लिए के.स. ए.यु.सी.पी.(बी) की ओर रुख किया.

*   *   *

४ फेब्रुअरी को भारतीय कामरेड के साथ वार्ता के एजेंडा पर चर्चा के बाद, भारतीय कामरेड ने पार्टी में मतभेद के सार को स्पष्ट करने का निवेदन किया ताकि उनमे से प्रत्येक अपने विचारो को विस्तार से रख सके और प्रश्नों को खड़ा कर सके जिस पर ए.यु.सी.पी.(बी) से वे प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखते है.

विचार विमर्श के प्रारम्भ में ही कामरेड राव ने घोषणा किया कि ए.यु.सी.पी(बी)- विश्व साम्यवाद के नेता- से सलाह लेने के लिए मास्को में इस पहली यात्रा के मिले अवसर से आये हुए कामरेड्स ख़ुशी महसूस करते है.

कामरेड राव ने कहा "हमारी पार्टी, वर्तमान में एक संकट से गुजर रही है. यह अपने कार्यो को करने की स्थिति में नहीं है. हमारी पार्टी ठप्प पड़ गयी है जो हमारे लिए गंभीर परेशानियाँ पैदा कर रही है. हम सभी इस बात से पूरी तरह सहमत है कि हम खुद अपने बल पर इस संकट का हल नहीं कर सकते और बिना ए.यु.सी.पी(बी) के सहयोग के भारत की कम्युनिस्ट पार्टी बस विखर जायेगी. ए.यु.सी.पी.(बी) के प्रति हमारा का पूर्ण विश्वास है और इसके समर्थन और मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में है."

कामरेड राव के वक्तव्य को कामरेड डांगे, घोष और पुन्नैया ने पूरी तरह पुष्टि की.

तब कामरेड घोष, डांगे और पुन्नैया ने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की वर्तमान स्थिति के बारे में अपने निजी विचारो को रखा.

पहली ही चर्चा में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में मौजूद गंभीर मतभेद उभरे जो एक तरफ कामरेड घोष और डांगे तो दूसरी तरफ कामरेड राव और पुन्नैया के विचारो में प्रतिबिंबित हुए.

भारतीय कामरेड्स के साथ हुए विचार-विमर्श का स-विस्तार विवरण नीचे दिया जा रहा है.

बहस के दौरान भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों के वक्तव्य के आधार पर और एयुसीपी(बी) को दिये गए सामग्रियों के अध्यन के आधार पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में मौजूद मतभेदों के सार को इन शब्दों में वर्णन करना संभव है:

कामरेड राव और पुन्नैया की अवस्थिति[ii]

कामरेड राव और पुन्नैया भारत की आंतरिक स्थिति का आकलन निम्न तरीके से करते है: मुद्रास्फीति, मूल्य वृद्धि, भूख और बेरोजगारी में वृद्धि के रूप में एक आर्थिक संकट भारत में में प्रकट हो रहा है. राष्टीय कांग्रेस टूट रहा है क्योकि इसने लोगो का विश्वास खो दिया है और वे निराश है. देश के कई भागो में किसान हथियारबंद सघर्ष की ओर चल पड़े है. सरकार लोगों के खिलाफ क्रूर आतंक को अपने मुख्य हथियार के रूप में सहारा ले रही है. इस आतंक का जबाव हथियारबंद

ताकत के द्वारा दिए जाने की जरुरत है. लेकिन अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की सफलता और वैश्विक साम्राज्यवाद की ताकतों के कमजोर होने के साथ.

कामरेड राव और पुन्नैया सोचते है कि भारत में जो क्रांतिकारी स्थिति उभरी है उसे एक नृशंस गृह युद्ध माना जा सकता है. देश के भीतर इस तरह के आकलन के आधार पर, वे सोचते है कि भारत में हथियारबंद संघर्ष संघर्ष का मुख्य रूप है.

कामरेड राव ने घोषणा की कि भारत में वर्ग संघर्ष गृह युद्ध के स्तर तक जा पंहुचा है और बिना गुरिल्ला युद्ध को संघर्ष का मुख्य रूप अपनाए कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता है. यह कहना गलत होगा कि पहले पार्टी और जनवादी मोर्चा बनाना जरुरी है और तब हथियारबंद संघर्ष शुरू करना है. क्रूर दमन को देखते हुए, एक जनवादी मोर्चा केवल हथियारबंद संघर्ष के दौरान ही बन सकता है जिसके दौरान हमारे पार्टी संगठन निर्मित और मजबूत होंगे. या तो प्रतिरोध करो या हाथ जोड़ कर बैठे रहो- यही मुद्दा है. हथियारबंद संघर्ष के बिना हम बिना किसी जन कार्यवाही किये केवल प्रचारात्मक कार्य करने को बाध्य होंगे. सबसे महत्वपूर्ण कारक जनता है और हथियारबंद संघर्ष का प्रश्न चर्चा के लिए इसके समक्ष जरुर रखा जाना चाहिए. अगर लोग हथियारबंद संघर्ष के लिए तैयार है तो इन लोकप्रिय भावनाओ को जब्त कर लोगो के साथ आगे बढ़ना ही होगा और बड़ी पार्टी के निर्मित होने और मजबूत होने का इन्तजार नहीं करना होगा.

हथियारबंद संघर्ष तीन चरणों में विकसित होगा: १) व्यापक स्तर पर गुरिल्ला कार्यवाई; २) गुरिल्ला युद्ध विस्तार करने के दौरान मुक्त क्षेत्रो का निर्माण; ३) पूरे देश की मुक्ति.

अपनी अवस्थिति को स्पष्ट करते हुए राव कहते है कि जब लोग कहते है कि हमें हथियारबंद संघर्ष हर जगह चलने की जरुरत है, यह हमारे विचार नहीं है. हमने तेलंगाना और आंध्र में हथियारबंद संघर्ष चलाया, दूसरे प्रान्तों में हमने संघर्ष के अन्य रूपों को अपनाया.

कामरेड डांगे और घोष पर भारत में चीनी पथ प्रयोग किये जाने के योग्य नहीं होने के तर्क करने का आरोप कामरेड राव और पुन्नैया लगाते है. कामरेड राव सोचते है कि भारत में "वर्ग संघर्ष" "चीनी संघर्ष के अनुभवों के आधार पर होगा यानि कि एक लम्बे गुरिल्ला युद्ध के दौरान मुक्त क्षेत्रो की स्थापना करते हुए और पूरे देश की मुक्ति के लिए मुक्त क्षेत्रो की स्थापना करते हुए." (१ नवम्बर १९५० को भाकपा के. स. के पोलितब्यूरो का पार्टी की नीति पर बयान.)

चर्चा के दौरान डांगे की अवस्थिति को अवसरवादी करार करते हुए राव ने ने डांगे से निम्न प्रश्न पूछे:

क्या आप हथियारबंद संघर्ष के प्रश्न को जनता के समक्ष रखने को तैयार है?

क्या कुछ दुसरे क्षेत्रो में जंहा अभी हथियारबंद संघर्ष नहीं है, निकट भविष्य में इसकी सम्भावना से इंकार करते है?

उन क्षेत्रो में जंहा सरकार ने एक क्रूर आतंकी शासन कायम की है और जंहा हम मजबूत है, आप किस तरह की कार्यनीति प्रस्तावित करते है?

कामरेड डांगे और घोष की स्थिति

कामरेड डांगे और घोष सोचते है कि वर्तमान में हथियारबंद संघर्ष का विस्तार करने के लिए पार्टी के पास प्रयाप्त ताकत नहीं, कि देश में संघर्ष का यह रूप मुख्य रूप नहीं माना जा सकता. साथ ही, वे निर्दिष्ट करते है कि देश के कुछ क्षेत्रो में जंहा हथियारबंद संघर्ष के लिए परिस्थितियां परिपक्व है, इसे जरुर चलाया जाना चाहिए. वे तेलंगाना में हथियारबंद संघर्ष का उस समय तक समर्थन करते है जबतक यह जनता के द्वारा समर्थित है, इतनी कि आगे भी अन्य क्षेत्रो में हथियारबंद संघर्ष विकसित करने की परिस्थितियों का विकास किया जा सके.

देश आज कृषि क्रांति की अवस्था में है. भूमिहीन किसान और गरीब पट्टेदार किसान देश की आबादी के बहुमत का गठन करते है. कृषि समस्या का समाधान क्रन्तिकारी तरीके से करने की जरुरत है और न कि पार्टी के सदस्यों के सबसे निडर लोगों के बीच से सशस्त्र समूहों की छोटी-छोटी टोली को विशेष जमींदारों की हत्या के लिए केंद्रीय समिति द्वारा निर्देशन देने के तरीके के द्वारा. इसने बहुत सारे पार्टी संगठनो को दुस्साहस के पथ पर चलने और लोगों की एकता कायम करने के लिए जरुरी संघर्ष के अन्य रूपों को अस्वीकार करने के लिए मजबूर किया है.

कामरेड डांगे हथियारबंद संघर्ष के बारे में केन्द्रीय समिति के वर्तमान समझ को बाम दुस्साहसवाद के एक नए रूप की अभिव्यक्ति मानते है. पार्टी सदर्स्य जो केन्द्रीय समिति के द्वारा अपनाई गयी इस दुस्सहस्वादी नीति की आलोचना करते है उन्हें, देश में फासीवादी आतंक के अस्तित्व को एक बहाने की आड़ में सशस्त्र संघर्ष को न्यायोचित ठहराते हुए, अवसरवादी और सुधारवादी करार कर दिया जाता है.

कामरेड डांगे केन्द्रीय समिति के सांगठनिक कार्यविधि को नौकरशाही का एक रूप मानते है जो गुटीय संघर्ष को मजबूत करने की ओर ले जाता है.

पार्टी के प्रकाशन, डांगी कहते हैं, सशस्त्र संघर्ष के लिए उकतानेवाली मांगों से भरे हुए हैं। यह एक प्रकार का दुस्साहसवाद है. यहां तक कि प्रेस के दमन की परवाह किए बिना एक सशस्त्र संघर्ष के नारे के प्रकाशन पर जोर देना क्या सही हैं, डांगे पूछते है? अगर कोई यह सोचता है कि प्रेस में सशस्त्र संघर्ष के लिए शोर मचाना मददगार नहीं है तो क्या यह सचमुच संशोधनवाद है?
डांगे उल्लेख करते है कि दिसम्बर की सभा में शांति के लिए संघर्ष, राष्टीय संयुक्त मोर्चा के गठन और मजदूर संगठनो की गतिविधि के प्रश्नों पर एक सहमती बनी थी.

डांगे सोचते है कि भाकपा के.स. भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले भारत के मजदूर वर्ग के महत्त्व और उसकी भूमिका को ध्यान में नहीं रखती. वह चीनी क्रांति के

अनुभवों को यांत्रिक ढंग से अनुसरण करने और भारत के सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की विशेषताओं को नजरंदाज करते हुए लागू करने का आरोप केन्द्रीय समिति के नेतृत्व पर लगते है.

भाकपा के. स. के प्रतिनिधियों की तरफ से भेजे गए प्रश्न

१. भारत के वर्तमान राजनीतिक धाराओं का आकलन हम कैसे करते है? क्या स्थिति स्पष्ट रूप से क्रांतिकारी है? भारत में आसन्न क्रांति का आकलन हम कैसे करते है?[iii]

१९४८ में द्वितीय कांग्रेस के समय(घोष के अनुसार) यह कहते हुए एक वक्तव्य जारी किया गया था कि आसन्न क्रांति बुर्जुआ जनवादी और समाजवादी क्रांति की विशेषताओं का संयुक्त रूप प्रदर्शित करे गा.[iv]

२. क्या वर्तमान भारत में हथियारबंद संघर्ष वर्ग संघर्ष का मुख्य रूप है?[v]

राव और पुन्नैया मानते है कि वर्तमान भारत में एक गृह युद्ध जारी है, कि हथियारबंद संघर्ष वर्ग संहर्ष का मुख्य रूप बन गया है और कि भारत में लोगो द्वारा इस विशेष संघर्ष के रूप को अपनाने के लिए सभी वस्तुगत स्थितियां मौजूद है.

डांगे और घोष मानते है कि हथियारबंद संघर्ष के लिए आवश्यक स्थितियां अभी परिपक्व नहीं है और कि भिन्न क्षेत्रो में हथियारबंद संघर्ष को जमीन के लिए आम किसान आन्दोलन के हिस्सा के रूप में देखा जा सकता है.

३. एक राष्टीय संयुक्त मोर्चा और हथियारबंद संघर्ष की तरफ कदम बढ़ने के कार्यभार को कैसे जोड़ा जाए ?
भारतीय कामरेड एक राष्टीय संयुक्त मोर्चा बनाने के कार्यभार पर भिन्न मत नहीं रखते, परन्तु कुछ (राव) सोचते है कि राष्टीय संयुक्त मोर्चा हथियारबंद संघर्ष के दौरान बनाया जा सकता है जबकि अन्य (डांगे) सोचते है कि पहले एक राष्टीय संयुक्त मोर्चा बनाने की जरुरत है तभी हथियारबंद संघर्ष की ओर रुख करने के लिए आवश्यक परिस्थितियां पैदा होँगी.

४. क्रांति के चीनी पथ को हम कैसे समझते है और क्या भारत में क्रांति चीनी पथ पर होगी? इसी से सम्बंधित - क्या भारत में गुरिल्ला युद्ध क्रांति की विजय के लिय मुख्य रास्ता है?

५. भारत के सामंतवाद विरोधी साम्राज्यवाद विरोधी क्रांति में मजदूर वर्ग की क्या भूमिका है? भारत में करीब ६० लाख मजदूर हैं. मजदूरों के अधिकांश भाग बड़े पैमाने के उद्योगों और परिवहन(४० लाख) में लगे है.

६. राष्टीय आजादी और संप्रभुता की रक्षा करने के कार्यभार को हम कैसे समझते है? क्या नेहरु सरकार ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कठपुतली है[vi] जिस तरह चिंग काई शेक की

कुओमिन्तंग सरकार अमेरिकी सरकार की कठपुतली थी या वर्तमान में प्लेवेन की फ़्रांसीसी सरकार अमेरिकी सरकार की कठपुतली है?

भारतीय सरकार की वास्तविक प्रकृति और इसकी विदेश नीति खास तौर से कोरिया के प्रश्न पर क्या है ?

७. हम कैसे १९४७ में इनफार्मेशन ब्यूरो की बैठक की रोपोर्ट में कामरेड ज्हनोव की प्रस्थापना को समझे जिसमे उन्होंने भारत को वैसे देशो में शामिल किया था जो साम्राज्यवाद विरोधी खेमा से सहानुभूति रखते है. यहाँ इससे क्या मतलब है - भारतीय जनता या भारतीय सरकार?[vii]

८. क्या हमें समकालीन भारत में जमीन के राष्टीयकारण का सवाल उठाने की जरुरत है?

उपनिवेशिक और अर्ध-उपनिवेशिक देशो में किसान आबादी बहुमत का गठन करते है. इन देशो में सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न कृषि क्रांति से सम्बंधित है. आईकेकेआई के छठी सभा ने इन उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों में जमीन के राष्टीयकारण का प्रस्ताव किया है. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जमीन के राष्टीयकारण के सवाल को खड़ा नहीं करती है. भारतीय कामरेड्स जानना चाह रहे है कि भारतीय परिस्थिति में इस प्रश्न को उठाया जाये या नहीं.

९. क्या पार्टी संगठन किसी पार्टी सदर्स्य को मृत्यु दंड दे सकता है अगर पार्टी के प्रति उसकी वफ़ादारी संदेहास्पद हो?[viii]

कुछ पार्टी सदर्स्यो ने उस तरह के उपाय की सिफारिश करते है, लेकिन डांगे के अनुसार, गुटीय उद्देश्य के लिए इसका दुरूपयोग होने का भय है.

१०. गुरिल्ला युद्ध के दौरान क्या कोम्मुनिस्तो को जमींदारों और साहुकारो की सम्पति क्रांतिकारी उपयोग के लिए अपनी खुद के सत्ता के अंग की संस्थाओ के गठित करने के पहले हस्तगत कर लेना चाहिए?[ix]

संलग्नक

क) भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों के साथ बहस की आशुलिपि.

ख) भारत की कम्युनिस्ट पार्टी का संविधान.

ग) भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा कोमिन्टर्न को सौपें गए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यवाही योजना का प्रारूप.

मलेंकोव, सुस्लोव, ग्रिगोरियन और युदीन द्वारा हस्ताक्षरित.

---

i. स्तालिन द्वारा हस्तलिखित टिपण्णीयां निम्नलिखित है:

१. भाकपा के कार्यवाही का कार्यक्रम

२. भाकपा के कर्यवाही के कार्यक्रम के मूल प्रस्थापनाओ से सहमत होने वाली पार्टियों के साथ ब्लाक बनाये.

३. पार्टी के संविधान में प्रत्यासी सदर्स्यता जोड़ने की जरुरत.

४. व्यक्तिगत आतंकवाद के खिलाफ. चीनी भी इसके विरुद्ध है.

ii बाएं हाशिये की तरफ एक बड़ा क्रॉस का चिन्ह यह इंगित करते हुए कि स्टॅलिन इन कामरेड्स के विचारो से सहमत नहीं थे.

iii "यह महत्वपूर्ण है' - बाएं हाशिये पर स्टॅलिन द्वारा लगाया गया निशान.

iv 'मूर्खतापूर्ण' बाएं हाशिये पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में.

v 'नहीं' बाये मार्जिन पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में.

vi 'वे कठपुतली नहीं है' बाएं हाशिये पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में

vii 'जनता' बाएं हाशिये पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में

viii 'नहीं' बाएं हाशिये पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में

ix 'नहीं' बाएं हाशिये पर स्टॅलिन की हस्तलिपि में

अनुवाद - प्रोलेतारियन क्रिटिक

www.proletariancritique.blogspot.in